5. श्रीमद्भागवत में शिष्टाचार

डॉ. सोनिया गुप्ता
सहायक प्रोफेसर हिंदी, महाराजा अग्रसेन महिला महाविद्यालय, झज्जर

भारतीय संस्कृति का आरंभ, सतयुग में हुआ। उस समय राजनीतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक प्रोटोकॉल का पूर्णता निर्वाह होता था। इसलिए सभी सुखी थे। किसी को सांसारिक अथवा शारीरिक रोगों का दुख नहीं था। सभी वर्ण, धर्म को अपनाकर व्यक्ति अपने कार्य ठीक प्रकार से करते थे। राजा–प्रजा का संबंध उपयुक्त था। जहां राजा, प्रजा को अपने प्राणों से प्रिय समझता था, वहां प्रजा भी राजा पर जान निछावर करने को तैयार रहती थी। चर–अचर का ईश्वर में पूर्ण विश्वास था। सतयुग के बाद त्रेता युग में भी कुछ त्रुटि आई, किंतु रामराज्य काल में त्रुटियां समाप्त हो गई और उस समय सब प्रकार से वर्ण, धर्म आदि का पालन होता था। सभी खुश थे। रामराज्य काल में सतयुग जैसा वातावरण था। रामराज्य काल के बाद द्वापर युग में प्रवेश हुआ। द्वापर में योग और योगिक शक्तियों का विस्तार हुआ। धर्म के नाम पर अनर्थ होने लगे। राजा धृतराष्ट्र और दुर्योधन जैसे व्यक्तियों ने समाज में कीचड़ उछालना शुरू कर दिया। कलयुग में सब प्रकार के अधर्म का आगमन आरंभ हुआ। ठीक उस समय कलयुग के व्यक्तियों की सहायता और उन्हें पार लगाने के साधन के रूप में व्यास मुनि ने श्रीमद्भागवत का सृजन किया। सर्वप्रथम सुखदेव ने राजा को श्रीमद् भागवत की कथा सुनाई और इस प्रकार परीक्षित को निर्वाण प्राप्त हुआ।

किसी ग्रंथ को पढ़ने–पढ़ाने के लिए उसमें श्रद्धा और विश्वास का होना आवश्यक है। यहाँ से आध्यात्मिक प्रोटोकॉल आरंभ होता है। इसके अनुसार भागवत के आरंभ में श्रीमद् भागवत की महानता की चर्चा की गई है। जब तक व्यक्ति ग्रंथ विशेष के माहात्म्य को नहीं जानेगा, उसका उस ग्रंथ में विश्वास उत्पन्न नहीं होगा और बिना विश्वास भक्ति नहीं होगी।

अतः भक्ति के लिए विश्वास आवश्यक है। उसके बिना ना ज्ञान होता है ना ही जीव को विश्राम ही मिल सकता है। अतः विश्वास पैदा करने के लिए ग्रंथ के माहात्म्य की चर्चा आवश्यक है। भागवत के आरंभ में भी इसके माहात्म्य पर लिखा गया है।

महात्म्य के बाद यह आवश्यक है कि जो कुछ उस ग्रंथ में बताया गया है, उसे अधिकृत अथवा समर्थ पुरुषों द्वारा कहलाया जाए। रामचरितमानस में जहाँ ईश्वर जीव संबंध, ईश्वर भक्ति आदि के बारे में कहा गया है, उसे मानसकार ने श्री राम के मुख से कहलवाया है। जहाँ सांसारिक अथवा आध्यात्मिक सिद्धांतों और नीतियों का संबंध है, वह ऋषि–मुनियों द्वारा कहलाया गया है। कहीं–कहीं पर स्वयं श्री राम ने भी इन की चर्चा की है। श्री राम भक्ति के बारे में स्वयं राम नहीं कह सकते थे। अतः उसके बारे में मानसकार ने शिव जी द्वारा पार्वती के माध्यम से कहलाया है। इसी प्रकार राम भक्ति और शिव भक्ति को एक दूसरे से अभिन्न बनाने के लिए राम द्वारा शिवलिंग की स्थापना रामेश्वर में कराई गई और उत्तरकांड में श्रीराम ने प्रजा को भी अपने गुप्त मंत्र के रूप में शिव भक्ति बताई है, उसी के अनुरूप शिव को राम भक्त बताया गया है। वास्तव में सारी रामचरितमानस शिव द्वारा ही पार्वती को सुनाई गयी है। जिसे पार्वती को ना केवल उसके माहात्म्य का पता लगा वरन् उसकी शंकाओं का समाधान भी हुआ। इस संदर्भ में श्रीमद्भागवत को सूतजी ने ऋषियों के प्रश्न के उत्तर में सुनाया है।

श्रीमद्भागवत को 12 स्कंधों में बांटा गया है और हर स्कंध में अध्याय है। इस ग्रंथ में भगवान के अलग–अलग अवतारों का वर्णन है। वेदव्यास द्वारा रचित इस महापुराण में मोक्ष पर्यंत फल की कामना से रहित धर्म का चित्रण हुआ है। जब तक शरीर में शक्ति रहे, तब तक इस

श्रीमद्भागवत का बार–बार पान करते रहें, यह पृथ्वी पर ही सुलभ है। ऋषियों ने सूत जी को यह कथा सुनाने के लिए विनय की क्योंकि वह निष्पाप थे। उन्होंने समस्त इतिहास, वेद और धर्म शास्त्रों का विधिपूर्वक अध्ययन किया था। तथा उनकी व्याख्या भी की थी। व्यास मुनि वेद को जानने वालों में श्रेष्ठ, सब भगवान की सगुण और निर्गुण परमात्मा को जानने वाले थे। उनका हृदय बड़ा ही सरल और शुद्ध था। इसलिए ऋषियों ने सूत जी को यह बताने के लिए विनती की कि सब शास्त्रों, वेदों और गुरुजनों के उपदेशों में जीवों के परम कल्याण के लिए, जो सहज साधन निश्चित किया है, उसकी कथा सुनाएं।

इस प्रकार श्रीमद्भागवत के आरंभ में ही संस्कृति के मूल सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया है। एक तो यह कि आत्मा अमर है, वह एक योनि को छोड़कर दूसरी योनि में कर्मों के अनुसार प्रवेश करती है और उसी योनि के अनुरूप लीला करती है। दूसरे यह सिद्ध हुआ कि आवागमन का सिद्धांत अटल है। इसी सिद्धांत के अनुसार ही जीव, अलग–अलग योनियों में उत्पन्न होता है। तीसरे आत्मा ही परमात्मा है। भागवत कार ने बताया कि ईश्वर भिन्न–भिन्न योनियों में लीला अवतार ग्रहण करते हैं और सतोगुण के द्वारा उनका निर्वाह करते हैं। वास्तव में यह जीवात्मा ही भिन्न–भिन्न योनियों में प्रवेश करती है और रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण के अनुसार परिचालित होती है, क्योंकि तमोगुण और रजोगुण पर काबू पाकर ही व्यक्ति सतोगुण में पहुंचता है। उस समय वह जीव परमात्मा स्वरुप हो जाता है और इस प्रकार सतोगुण में प्रवेश करके, उस योनि को चलाता है। इस प्रकार आत्मा को परमात्मा का ही रुप बताया गया है। भागवत के सृजन काल में द्वापर युग की समाप्ति और कलयुग का प्रारंभ होने वाला था। वेदव्यास यह समझ सकते थे कि कलयुग में किस प्रकार ब्राह्मण लोग अपने आप को केवल हरि भजन का अधिकारी समझेंगे और दूसरे वर्णों को कथा का अधिकारी न समझ अपने आप को ही सर्वश्रेष्ठ कहेंगे। अतः वेदव्यास ने इस रचना में यह सिद्ध किया है कि मनुष्य जाति की तो बात ही क्या है पशु–पक्षी भी ईश्वर भजन के अधिकारी हैं। इसलिए उन्होंने इस ग्रंथ में ईश्वर को याद करने पर गज (हाथी) की ईश्वर द्वारा रक्षा करवाई है। राम द्वारा जटायु की भक्ति पर उसे अपना लोक दिया जाना, कृष्ण का गायों से प्रेम और बृज के, गवाले, गोपियों से प्रेम का वर्णन नहीं किया, अपितु ईश्वर के भी वराह, मत्स्य आदि अवतारों से यह सिद्ध कर दिया है कि चर अचर ही ईश्वर भजन के अधिकारी हैं और ईश्वर का कोई एक रूप नहीं है, वह भी अनेक रूपों में अवतरित होकर जन उद्धार करते हैं। उन्होंने बताया है कि ईश्वर ने 22 अवतार लिए हैं, पहले सनक, सनंदन, सनातन और सनत् कुकार ब्राह्मणों के रूप में अवतार ग्रहण करके ब्रह्मचर्य का पालन किया।

दूसरे अवतार में सूकर रूप ग्रहण करके नरक में गई हुई धरती को निकाला। तीसरे अवतार में नारद का रूप धारण किया और नारद पंचरात्र का उपदेश दिया। नर नारायण के रूप में चौथा रूप ग्रहण किया और ऋषि बनकर मन और इंद्रियों को नियंत्रित करना सिखाया। पाँचवें अवतार में कपिल के रूप में प्रकट होकर तत्वों का निर्णय करने वाले शास्त्रों का उपदेश दिया। छठे अवतार में अत्रि ऋषि की संतान बनकर उत्पन्न हुए और अलर्क और प्रह्लाद आदि को ब्रह्म ज्ञान का उपदेश दिया। सातवीं बार यज्ञ के रूप में अवतार लेकर याम आदि देवताओं के साथ स्वयंभू मन्वंतर की रक्षा की। आठवाँ अवतार ऋषभदेव के रूप में लेकर सभी आश्रमियों को मोक्ष का मार्ग दिखाया। नौवीं बार राजा पृथु के रूप में अवतार लिया, जिसमें पृथ्वी से समस्त औषधियों को उत्पन्न किया जो सबके लिए कल्याणकारी हुआ। दसवाँ अवतार मत्स्य रूप में लिया और डूबती हुई पृथ्वी को नौका पर बैठा कर व्यवस्था की रक्षा की। 11वाँ अवतार कच्छप रूप में धारण किया और मंदराचल को अपनी पीठ पर धारण किया। 12 वीं बार धन्वंतरी के रूप में अमृत लेकर समुद्र से उत्पन्न हुए। 13वीं बार मोहिनी रूप में दैत्यों को मोहित करते हुए देवताओं को अमृत पिलाया। 14वें अवतार में नरसिंह रूप धारण कर हिरण्यकश्यप का वध किया और संसार से निशाचर राज्य को समाप्त किया। 15वीं बार वामन का रूप धारण करके भगवान दैत्यराज बली के यज्ञ में गए और ण तीन पग धरती मांग कर उसके अहंकार को चूर चूर किया। 16 वीं बार परशुराम अवतार में जब उन्होंने देखा कि राजा लोग ब्राह्मणों के द्रोही हो

गए हैं तो उन्होंने राजाओं का संघार किया। इस प्रकार भगवान ने सामाजिक प्रोटोकॉल को ध्वंस होने से बचाया। 17 वें अवतार में सत्यवती के गर्भ से पाराशर जी द्वारा वेदव्यास के रूप में पैदा हुए। उस समय लोगों की समझ और धारणा शक्ति कम देखकर उन्होंने वेद रूपी वृक्ष की कई शाखाएं बना दी।18वें रूप में देवताओं का कार्य पूरा करने की इच्छा से उन्होंने राम अवतार लिया और रावण वध कर निशाचरों का विनाश किया। 19वीं और 20वीं अवतार में उन्होंने बलराम और श्रीकृष्ण के नाम से जन्म लेकर पृथ्वी का भार उतारा। इस अवतार में उन्होंने कंस और शिशुपाल जैसे राक्षसों का वध किया और महाभारत संग्राम कराके पांडवों को राज्य दिलवाया। उसके बाद कलयुग आ जाने पर देवताओं के द्वारा दैत्यों को मोहित करने के लिए अंजन के पुत्र रूप में अवतार लिया और उसके बाद जब कलयुग का अंत पास होगा और राजा लोग प्राय लुटेरे हो जाएंगे। यह कुछ अवतार गिनवाए गए हैं, वरना तो हर जीव में ही ईश्वर का अंश होता है और हर जीव को ही ईश्वर का अवतार समझना और मानना चाहिए।

जीव का सूक्ष्म और स्थूल शरीर, अविद्या से ही आत्मा में आरोपित है। जिस अवस्था में आत्मस्वरूप के ज्ञान से यह आरोप दूर हो जाता है, उसी समय परमात्मा मिलते हैं और आत्मा परमात्मा में लीन हो जाती है। यही जीव और ब्रह्म का आध्यात्मिक प्रोटोकॉल का संबंध है। ब्रह्मा प्राणियों के मन में छिपे रहकर, ज्ञानेंद्रिय और मन के नियंता के रूप में, उनके विषय को भी ग्रहण करते हैं, परंतु उनसे अलग रहते हैं। भगवान संसार के निर्माता होने पर भी उससे सर्वथा परे हैं। उनके रूप को वही जान सकता है, जो नित्य छल कपट की भावना से रहित होकर उनके चरण कमलों का सेवन करते हैं। कलयुग के अज्ञान रूपी अंधकार से गिरे लोगों के लिए भागवत पुराण एक वरदान है। सूतजी ने यह कथा ऋषियों के माध्यम से जन समाज को सुनाई, जैसा उन्होंने सुखदेव जी द्वारा परीक्षित को सुनाते समय सुना था, उसी को इस रचना में कलमबद्ध किया है। महर्षि वेदव्यास ने जब भागवत की रचना की, उस समय देश में स्त्री, शूद्र और पतित जाति के व्यक्ति वेद श्रवण के अधिकारी नहीं गिने जाते थे। ब्राह्मणों ने अपनी मनमानी चला रखी थी। क्षत्रिय भी विषय भोगों में लिप्त हो गए थे। व्यास ने अवतार लेकर वेदों की समीक्षा की और एक वेद को चार भागों में बांटा, क्योंकि एक वेद बहुत समृद्ध होने के कारण प्रत्येक व्यक्ति के पाठन और श्रवण में नहीं आ पाता था।

संदर्भ

1. श्रीमद् भागवत ने शिष्टाचार देवीदयाल अग्रवाल, पृ0 सं0 7
2. भागवत की कथाएं डॉक्टर लक्ष्मीमल, पृ0 सं0 88
3. भारतीय शिष्टाचार विवेकानंद अत्री, पृ0 सं0 173
4. हिंदी साहित्य में शिष्टाचार, डॉ महेश शर्मा, पृ0 सं0 171